INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS
VOLUME 2, ISSUE ,12 December, 2014
ISSN-2320-2882
ORIGINAL ARTICLE

शिक्षा की सामाजिक सांस्कृतिक सरोकार मूल्यपरक शिक्षा

डॉ. बनवारी लाल शर्मा
एम.एससी.(रसायन),एम.ए.(इतिहास),एम.एड.(शिक्षा),
पीएचडी(शिक्षा)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया है कि–''हमारे बहुवर्गीय समाज में शिक्षा को सर्वव्यापी और शाश्वत मूल्यों को प्रोत्साहित करना चाहिए तथा भारतीय जन में राष्ट्रीय एकता भावना बढे और संकीर्ण सम्प्रदायवाद, धार्मिक अतिवाद, हिंसा, अन्धविश्वास व भाग्यवाद को समाप्त किया जा सके। हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि मनुष्य अकेला शून्य में निवास करने वाला प्राणी नहीं है। उसकी मूल्यपरक शिक्षा उसके विशिष्ट सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ से जुडी होनी चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण, समानता, पर्यावरण संरक्षण, प्रजातंत्र, स्वतंत्रता, बन्धुत्व, समाजवाद तथा धर्मनिरपेक्षता आदि मूल्यों की शिक्षा सभी स्तरों के लिए आवश्यक है। ''

मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता :–

आज समाज में सामान्य आदमी की यह धारणा है कि मेहनतकश एवं ईमानदार आदमी पिस रहें हैं और झूठ एवं फरेब का रोजगार करने वाले फल–फूल रहे हैं। ईमानदार आदमी को मूर्ख माना जाता है। इस धारणा ने शिक्षा के क्षेत्र में अनुशासनहीनता श्रम के प्रति अनास्था, स्वकर्तव्य के प्रति उदासीनता, अनुत्तरदायित्व आदि को जन्म देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

उक्त स्थिति ने आज मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता को अनुभूत कराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। **विज्ञान भी स्वीकार कर चुका है कि भारतीय जीवन मूल्य ही दीर्घजीवी विकास का आधार हैं ।** अब हमारे कर्णधारों को यह बात समझ लेनी चाहिए कि मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा के अभाव में शिक्षा में गुणात्मक सुधार की आशा एक मृगमरीचिका ही सिद्ध होगी। वास्तव में मूल्यों की यह संकटग्रस्त स्थिति जिस प्रकार जीवन के अन्य अंगों में व्याप्त है, उसी प्रकार स्कूलों, कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों के छात्रों तथा शिक्षकों में व्याप्त है। इसे एक बहुत खतरनाक कारण के रूप मे माना जाता है।

Please cite this Article as: डॉ. बनवारी लाल शर्मा, "शिक्षा की सामाजिक सांस्कृतिक सरोकार मूल्यपरक शिक्षा" International Journal Of Creative Research Thoughts, Volume 2, Issue.12,December, 2014

अतः यह आग्रह किया जाता है कि शिक्षा की प्रक्रिया का पुनः अभिविन्यास किया जाय तथा युवकों को इस बात की पुनः अनुभूति करायी जाय कि इस तरह न तो शोषण, असुरक्षा तथा हिंसा को रोका जा सकता और न ही किसी संगठन, समाज को सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक मानदण्डो को स्वीकार किये और पालन किये बिना बनाये रखा जा सकता है। पिछले अनुभवों से यह सीखते हुए, यह आशा की जाती है कि सुसंगत तथा व्यवहार मूल्य–प्रणाली को ऐसी प्रक्रियाओं के माध्यम से लागू किया जाय जो जीवन के प्रति तर्क–संगत, वैज्ञानिक तथा नैतिक दृष्टिकोण पर आधारित हो।

मूल्यपरक शिक्षा की अवधारणा :–

मूल्यपरक शिक्षा की अवधारणा अपेक्षाकृत आधुनिक एवं व्यापक है। परम्परागत रूप में ''धार्मिक शिक्षा'', नैतिक शिक्षा'' आदि जो प्रचलित हैं, उनसे यह भिन्न है। मूल्यपरक शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा से है जिसमें हमारे नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य समाहित हो। इसमे विभिन्न विषयों को मूल्यपरक बनाकर उसके माध्यम से विभिन्न मूल्यों को छात्रों के व्यक्तित्व में समाहित करने पर बल दिया जाता है। जिससे उनका सन्तुलित एवं सर्वतोन्मुखी विकास हो सके।

मूल्य शिक्षा (वेल्यू एजूकेशन) के दो अर्थ हो सकते हैं –

1. मूल्यो की शिक्षा (एजूकेशन ऑफ वेल्यूज)
2. मूल्यसमाहित या मूल्यपरक शिक्षा (वेल्यू ओरिएण्टिड एजूकेशन)

प्रथम के अन्तर्गत – हम नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा इतिहास, भूगोल, जीवनशास्त्र, रसायनशास्त्र, भौतिकशास्त्र आदि की शिक्षा की भॉति एक स्वतंत्र विषय के रूप में देना चाहते हैं।

द्वितीय के अन्तर्गत – मूल्यपरक शिक्षा में सभी विषयों में मनोवैज्ञानिक ढंग से मूल्य समाहित करके उक्त मूल्यों के विकास पर बल देते हैं। आज के भारतीय संदर्भ में ''वेल्यू एजूकेशन'' को दूसरे अर्थ में स्वीकार किया जाना चाहिए।

मूल्यपरक शिक्षा के उद्देश्यः–

छात्रों में सहयोग, प्रेम एवं करूणा, शान्ति एवं अहिंसा, साहस, समानता, बन्धुत्व, श्रम–गरिमा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, विभेदीकरण की शक्ति आदि मौलिक गुणों का विकास करना।

- छात्रों को एक उत्तरदायी नागरिक बनने के लिए प्रशिक्षित करना।
- राष्ट्रीय लक्ष्यों–समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रीय एकता, लोकतंत्र का सही ढंग से बोध कराना।
- देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा आर्थिक परिस्थितियों के सम्बन्ध में उन्हें जागरूक बनाना साथ ही उन्हें उनमें वांछित सुधार लाने के लिए प्रोत्साहित करना।
- निम्नलिखित के प्रति उनमें समुचित दृष्टिकोण विकसित करना –
    - (1) स्वयं एवं अपने साथियों के प्रति
    - (2) स्वदेश के प्रति
    - (3) मानवता के प्रति
    - (4) सभी धर्मो एवं संस्कृतियों के प्रति
    - (5) जीवन एवं पर्यावरण के प्रति
- छात्रों को स्वयं को जानने के लिए प्रोत्साहित करना जिससे वे स्वयं में आस्था रखने में समर्थ हो सकें।

मूल्यपरक शिक्षा के साधनः–

- विद्यालयी विषयों तथा पाठ्यक्रमों द्वारा मूल्यपरक शिक्षा –
- अप्रत्यक्ष्य विधि–प्रार्थनाऐं कहानी कथन, मौन बैठक, समूहगान अभिनय, सामूहिक गतिविधियॉ, पाठ्यसहगामी क्रियाऐं –
- प्रत्यक्ष विधि – नैतिक शिक्षा के रूप में – पाठ्यपुस्तकों द्वारा –
- पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं द्वारा मूल्यपरक शिक्षा–
- खेल–कूद, एन.सी.सी., एन.एस.एस., स्काउटिंग एवं गाइडिंग, उत्सव आयोजन, समाजसेवा, श्रमदान आदि।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

- 1-पी.डी.पाठक: भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं,पृष्ठ 571-574
-2 शिक्षा की चुनौती :नीति सम्बन्धी परिप्रेक्ष्य,शिक्षा-मंत्रालय, भारत सरकार, 1985 पृष्ठ 7
-3 गुप्त, नत्थूलाल:मूल्यपरक शिक्षा, पृष्ठ 163
-4 *Towards A New National Education Policy(Draft Proposals), CBSE, New Delhi, 1985.*